Indian Journal of Modern Research and Reviews

This Journal is a member of the *'Committee on Publication Ethics'*

Online ISSN:2584-184X

Review Paper

मारवाड़ की लोक संस्कृति व सामाजिक इतिहास (1793 ई. - 1803 ई.)

डॉ. ममता रानी

जय नारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर, राजस्थान,भारत

Corresponding Author: * डॉ. ममता रानी

DOI: https://doi.org/10.5281/zenodo.19564245

सारांश

इतिहास को जानने के लिए उस समय का सामाजिक इतिहास व लोक संस्कृति बहुत ही सहायक सिद्व होता हैं। इसके अन्तर्गत सामाजिक दशा, जातिगत व्यवस्था, स्त्रियों की दशा, दहेज प्रथा, वस्त्र आभूषण व खान-पान आदि अध्ययन किया जाता है। 1793 ई. से 1803 ई. तक मारवाड़ मे महाराजा भीमसिंह का शासन रहा। इसकी जानकारी हकीकत बही, मुर्दम शुमारी, तवारीख, मारवाड़ री ख्यात, राणी मंगा भाटो री बही, राठौड़ों की ख्यात, विवाह बही, रसीलेराज, जवाहर खाना बही इत्यादि बहियों में जानकारी मिलती है।

Manuscript Info.

✓ **ISSN No:** 2584-184X
✓ **Received:** 13-10-2025
✓ **Accepted:** 27-11-2025
✓ **Published:** 30-12-2025
✓ **MRR:3(12):**2025;115-120
✓ **©2025, All Rights Reserved.**
✓ **Peer Review Process:** Yes
✓ **Plagiarism Checked:** Yes

How To Cite

डॉ. ममता रानी. संस्कृत भाषा की संरचनात्मक विशेषताएँ: एक भाषावैज्ञानिक अध्ययन. Indian J Mod Res Rev. 2025;3(12):115-120.

मुख्य शब्द: हकीकत, मुर्दम, तवारीख, जवाहर खाना, हकीकत।

प्रस्तावना

मारवाड़ की धरती पर अनेक महाराजाओं ने शासन किया। महाराजा ने अपने-अपने समय में मारवाड़ को ऊँचाइयों तक पहुँचाया। 1793 ई. - 1803 ई. तक मारवाड़ में महाराजा भीम सिंह का शासन रहा। महाराजा भीमसिंह विजयसिंह के पौत्र व भोमसिह के पुत्र थे। कवंर श्री भोमसिंह की बहु चवाण जी के कंवर महाराजा भीमसिंह हुए1 भीमसिंह का जन्म वि.स. 1822 आषाढ़ सूदि 12 को हुआ महाराजा भीमसिंह का प्रारंभिक जीवन कष्टदायक ही रहा। उतराधिकारी संघर्ष और मराठों के वर्चस्व के कारण काफी कठिनाइयोंयों का सामना करना पड़ा। इन मुश्किलों के चलते महाराजा भीमसिंह ने अपने राज्य को सुव्यवस्थित करने के लिए बहुत प्रयास किए। क्योंकि किसी भी राजा की महानता उस राज्य की प्रशासनिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक व्यवस्था पर निर्धारित होती है।

मरू प्रदेशीय समाज का मूल आधार वैदिक वर्ण व्यवस्था ही थी। लेकिन धीरे-धीरे इसमें काफी शैभिल्प उत्पन्न हो गया। ब्राह्मणों ने अपने यज्ञ, पूजा-पाठ को छोड़कर कृषि व पशुपालन का काम भी करने लगे थें। वैश्यों ने भी व्यापार करने के साथ-साथ कृषि का कार्य करने लगे थे। वर्ण व्यवस्था में परम्परागत कठोरता नही रही थी। समाज में अब वर्ण व्यवस्था का स्थान जाति व्यवस्था ने ले लिया था। राजनैतिक दृष्टि से यहां का समाज तीन वर्गो में विभक्त किया जा सकता है। समाज में सर्वप्रथम स्थान शासक वर्ग का था। इस वर्ग में राजा व राजपरिवार के लोग व मारवाड़ के बड़े-बड़े सामन्तों का स्थान था। इस वर्ग में मारवाड़ का राजा प्रथम व्यक्ति माना जाता था। समाज में दूसरा वर्ग राजकीय कर्मचारियों और धनाढ्य व्यक्तियों का था। इनकी संख्या समाज में कम थी लेकिन इनका प्रभुत्व था।

© 2025 डॉ. ममता रानी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

राजकीय कर्मचारी वास्तविक शासन का संचालन करते थे। यह वर्ग राज्य में बैंकर का कार्य भी करता था। आवश्यकता पड़ने पर राजा इन व्यापारियों से आर्थिक सहयोग की अपेक्षा रखता था।3 राजा द्वारा सेठ व साहुकारों को प्रसन्न रखने के लिए उन्हे सिरोपाव आदि राजकीय सम्मान देकर इनकी प्रतिष्ठा में वृद्वि करता था।4 समाज में तीसरा वर्ग जन साधारण का था जिसके अन्तर्गत कृषक, मजदूर और छोटी-मोटी व्यवसायिक जातियों की गणना होती थी। जन साधारण पर राजा व सामन्तों का दबाव रहता था। सामंत व राजकीय कर्मचारी इस वर्ग का शोषण करते थे।

जाति व्यवस्थाः-

महाराजा भीमसिंह के समय मारवाड़ में समाज जातियों व उपजातियों के जाल के रूप में मुखरित था। सामाजिक स्तर और आपसी संबधों का आधार जाति व्यवस्था ही था। इन जातियों को दो भागों में बाँटा जा सकता है। स्वर्ण जातियाँ तथा निम्न जातियाँ। स्वर्ण जातियों का समाज में ऊंचा स्थान था निम्न जातियों का समाज में कोई सम्मानित स्थान नही था। इन जातियों को स्थानीय समाज में छतीस भवन जात कहा जाता था।

ब्राह्मणः-

समाज में ब्राह्मण मारवाड़ की ही नही बल्कि सारे भारत की एक प्रसिद्व जाति रही है। मारवाड़ में इस जाति का बहुत महत्व था। हिन्दुओं का कोई भी काम ब्राह्मणों के बिना पूरा नही होता था। जन्म, विवाह, विद्या आरम्भ, परदेश जाने और घर आने, तीर्थ नहाने व अंतिम संस्कार आदि इन सभी कार्यो में ब्राह्मण की आवश्यकता रहती थी। समाज में ब्राह्मण का स्थान सर्वोपरि था। ब्राह्मणों की अनेक जातियां एवं उपजातियां थी जैसे - पुष्करणा ब्राह्मण (ये ब्राह्मण मारवाड़ के उतर ओर पश्चिम में अधिक बसे हुए थे), श्रीमाली, प्रोहित, जोशी, पालीवाल, आचार्य, आदि ब्राह्मण जातियां थी।5 कुछ ब्राह्मणों को उनके क्षेत्र के अनुसार नाम दिया गया जैसे पाली के निवासी पालीवाल, श्रीमाल क्षेत्र व सांचैर क्षैत्र के सांचैर ब्राह्मण कहलाये।6 शुभ व अशुभ कार्यों में ब्राह्मणों की उपस्थिति वांछनीय होती थी।7

राजपूतः-

मारवाड़ में राजपूत खुबसुरत लम्बे उंचे कद के शारीरिक दृष्टि से बलवान होते थे। राजपूत मुख्य रूप से सैनिक कार्यो में भाग लेने वाली जाति मानी जाती थी। राज्य की सम्पूर्ण सता इस जाति के पास ही थी। राजपरिवार की सुरक्षा विश्वस्त राजपूतों को नियुक्त किया जाता था। राजवंश मे विशेष अवसरों पर इनकी अहम भूमिका होती थी।8

राजपूतों की अनेक खांपे थी जैसे चंापावत, कंूपावत, उदावत, जेतावत, करणोत, करमणोत, जोधा, मेड़तिया आदि। मारवाड़ में राठौड़ो के अलावा भाटी, पंवार, देवड़ा सिसोदिया, चैहान, तंवर आदि राजपूत जातियां निवास करती थी।

चारणः-

मारवाड़ में चारणों का विशेष स्थान था। राजा और संामत वर्ग में इनका अत्यधिक सम्मान था। चारण जाति दो वर्गो में विभाजित थी। मारू और काछेला। मारू चारणों की 120 शाखाओं मे से मारवाड़ में 53 शाखाएं ही थी।

महाजन या वैश्यः-

मारवाड़ के सम्पूर्ण व्यापार पर इनका अधिकार था। मारवाड़ के बाली, देसुरी, जालौर, सोजत, नागौर, डीडवाना और संाभर के प्रदेशों में यह जाति अधिक संख्या में निवास करती थी। महाराजा विजयसिंह के समय पर अपनी आर्थिक कठिनाईयों को दूर करने के लिए इस वर्ग से कर्ज लिया था।9 व्यापारिक कार्यो के साथ ही मारवाड़ में भंडारी, सिंघवी, मुहणोत आदि महाजनों ने राजकीय सेवा में प्रवेश कर प्रशासनिक पदों पर पहुंच गये थे।10 महाराजा भीमसिंह के समय सिंघवी जोधराज, इन्द्रराज व बनेचंद राजकीय सेवा में महत्वपूर्ण पद पर कार्यरत थे।11

खेतिहर जातियांः-

सम्पूर्ण जनसंख्या का नौंवा भाग केवल जाट जाति का था। मारवाड़ की सम्पूर्ण खेती योग्य भूमि के एक चैथाई भाग पर केवल जाट ही खेती करते थे।12 मारवाड़ में जाट कठोर परिश्रमी, लम्बे, ऊँचे कद के, शारीरिक दृष्टि से मजबूत और वीर होते थे। इन्हें मारवाड़ में मोडी जात कहा जाता था। जाटों के अलावा बिश्नोई, माली, पिटल और सीरवी आदि जातियां मारवाड़ मे खेती और पशुपालन का धन्धा करती थी।13

लिखने वाली या मुत्सद्दी जातियांः-

मर्दुम शुमारी के अनुसार इस वर्ग में कायस्थ, खत्री और ओसवाल जाति के लोग शामिल थे। कायस्थों का मुन्शी का पेशा था। मारवाड़ में पुष्करणा ब्राह्मण भी यही काम करते थे।14

अन्य कार्य करने वाली प्रमुख जातियाँः-

मारवाड़ कई छोटे-बड़े कार्य किसी विशेष जाति के द्वारा ही किया जाता था। जैसे- सुनार, कंसेरा, लखेरा, खाती, बंबेरा, पिंजारा, कलाल, कसाई, घंाची, रहबारी, कुम्हार, तेली, मोची, धोबी, गोला, बेलदार, सिलावट, तम्बोली, जुलाहे, नाई, भंगी आदि प्रमुख जातियां थी।

मुहणोत नैणसी ने समाज में छोटे-छोटे व्यवसायों और हीन धन्धों में लगी हुई जातियों को मारवाड़ की छतीस अन्य जातियां कहा है। इन सभी जातियों के अपनाये हुए कार्य को समाज में तुच्छ माना है।15

जातियों के बीच मे आपस मे खान-पान का निषेध था और हुक्का पानी जाति स्तर का प्रमाण माना जाता था। परन्तु इस प्रकार के जाति-विभेद होते हुए भी इस समय के लोगो का सामाजिक जीवन सामुहित आधार पर संगठित था। किसी भी जाति के जीवन में ऐसे अवसर अनिवार्य थे। जबकि दूसरी जाति का सहयोग आवश्यक हो जाता था।

स्त्रियों की दशाः-

स्त्रियां हीनता का द्योतक था। समाज में स्त्रियों का स्थान नगण्य था। उनके व्यक्तित्व के उभरने का कोई साधन नही था। मारवाड़ में राजवंश घराने में स्त्री पुरूष की अर्धागिनी होने के कारण यहां पर धार्मिक व सामाजिक कार्यो को सम्पन्न करने के लिए पुरूष के साथ उसकी उपस्थिति अनिवार्य समझी जाती थी। पतिवर्त धर्मपालन के लिए अपने शरीर को हंसते-हंसते अग्नि में समर्पित कर देने के त्यागपूर्ण कार्य से स्त्री को समाज में त्याग और बलिदान का प्रतीक

© 2025 डॉ. ममता रानी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

माना जाता था। राजपूतों में स्त्रियों का विशेष स्थान था।16 स्त्री की रक्षा हेतु अपने प्राणों की बाजी लगा देते थे।17 वे स्त्री शक्ति के प्रतीक के रूप में स्त्री की पूजा करते थे।
स्त्री जाति के विकास के मार्ग में बाधाएं स्वरूप यहां पर पर्दा प्रथा, बहुविवाह, बाल विवाह और दहेज प्रथा आदि कुरीतिया विद्यमान थी। राजपूतों में पर्दा प्रथा जहां जातिय सम्मान का सूचक माना जाता था, वहां इस प्रथा के कारण स्त्रियों की स्वंतत्रता पर प्रतिबंध भी लगा हुआ था। इस तरह से मारवाड़ में स्त्री शिक्षा का अभाव उसकी हीन दशा के लिए उतरदायी था। वे स्त्री शक्ति के प्रतीक के रूप में स्त्री की पूजा करते थे।

सती प्रथा -
राजपूताना में जगह-जगह सती स्मारक लेख इस बात के साक्षी है कि सती प्रथा का प्रचलन बहुत अधिक था। प्रारम्भ में स्त्रीयां अपने पति के शव के साथ स्वेच्छापूर्वक अग्नि मे प्रवेश कर जाती थी। कभी-कभी मारवाड़ में वंश परम्परा बनाये रखने के लिए भी स्त्री को सती होने के लिए मजबूर किया जाता था।18

महाराजा भीमसिंह की मृत्यु के बाद उनके साथ उनकी आठ रानियां सती हुई थी-
1. तंवरजी छोटा, बीकानेर के गांव लखासर के तुवर बखावरसिंह की बेटी।
2. जैसलमेर रावल रायसिंह की बेटी।
3. देवड़ी जी मंडार राव केसरीसिंह की बेटी।
4. वीरपुरीजी गांव लुणावाडा की बेटी।
5. सोढ़ा मोतीसिंहजी की बेटी अमरकोट की बेटी।
6. चावड़ा भाणसा के अजीत सिंह चावड़ा की बेटी।
7. तुंवरजी बड़ा केलावा के तुंवर सुरताण सिंह की बेटी।
8. लाड़ी भटीयाणी जी ओसिंया के रावलोत सरूपसिंह की बेटी।19
9. इन रानियों के साथ-साथ कई पड़दायत, (बख्तराय, रूपरस, कुसालराय, रंगरूपराय) गायणीया (दास, सेविका) (फुलबेल, चंचलराय, नीरतराय, संुदराय, मैताबराय, रतनजोत ओर तान भंडारी, ये नागौर में थी जब महाराजा भीमसिंह की मृत्यु हुई तो इन्होने संवत 1860 कार्तिक सूद 7 को सती हुई।), डावड़ीया (तुलछाई, मुलकी, रूपां, रतनाई, लाऊडी, रूखमाई, नऊडी) आदि के सती होने का उल्लेख मिलता है।20

सोढ़ा बखता नागौर में खास बरंदरा में एक नौकर था, जो महाराजा भीमसिंह से जोधपुर में खरची लेने के लिए आया था। तब उसे महाराज के देह त्यागने की बात पता चली तो उसने कार्तीक सूद 11 को मंडोर में महाराजा के पीछे जल कर मर गया था।21 महाराजा भीमसिंह की रानियों के द्वारा सती होने का वर्णन राणीमंगो की बही में मिलता है। सती होने से पूर्व महारानी ने भाट आईदान कों उदास देखकर उसे सांत्वना दी, "तू क्यू बिलखो (उदास) दलगीर (भाव विह्वव) हुवै, इण पाट जो राज करसी सो थारो लाड राखसी।"22
इस प्रकार कहा जा सकता है कि मारवाड़ में दहेज प्रथा सती प्रथा, बहु विवाह प्रथा आदि कुरीतियां विद्यमान थी।

बहु विवाह -
प्राचीनकाल से ही यह प्रथा प्रचलित थी कि पहले तो प्रथम पत्नी के कोई संतान नही होती थी। तो दूसरे विवाह की जरूरत होती थी लेकिन पूर्व मध्यकाल में राजपूत शासकों में बहु विवाह प्रथा का प्रचलन काफी हो गया था। बहु विवाह एक आर्कषण व सामान्य प्रथा बन गई थी। मुगल काल में राजपूतों शासकों में यह प्रथा काफी प्रचलित हो गई थी। राजपूत राज्यों की जनाना ड्योढी में इस का प्रमाण मिलता है। मारवाड़ के महाराजा भीमसिंह की 11 रानियाँ थी इसका उल्लेख हमें राणी भाटों की बही में मिलता है।23

वस्त्र एवं आभूषणः-
महाराजा भीमसिंह के सामाजिक व लोकसंस्कृति को समाज के स्वरूप को दर्शाया गया है। महाराजा भीमसिंह कालीन स्त्रियों के वस्त्र, आभूषण विभिन्न वर्ग के रूप में स्त्रियों के द्वारा वस्त्र एवं आभूषण धारण किया जाता था जिसका विवरण जवाहर खाना एण्ड मिन्ट तथा जोधपुर की दस्तुर बही में मिलता है। राजवंश में घरेलू व्यवस्था को सुचारू रूप सें संचालित करने के लिए 'कारखाना'24 शब्द को प्रयोग में लेते थे। जोधपुर राजपरिवार की घरेलू व्यवस्था को बनाये रखने एवं पारिवारिक, धार्मिक, सामाजिक, राजकीय रीति-रिवाजों को सम्पन्न करने के लिए कोठार व कारखानों की प्रमुख भूमिका रही है।

कपड़ो का कोठारः-
राजवंश के लोगो तथा सेवक नौकर चाकरों के दैनिक जीवन में या विशेष उत्सव में काम आने वाले कपड़ों की पूर्ति इसी विभाग के द्वारा की जाती थी। विशेष अवसरों पर महाराजा द्वारा कपड़ो का दान सिरोपाव (सिर से पैर तक के वस्त्र) आदि की व्यवस्था यही से होती थी। महाराजा के द्वारा जन्म से मृत्यु तक पहने जाने वाले कपड़े इसी कारखाने से जाते थे।

बागा का कोठारः-
महाराजा व रानीयों के कपड़ों की पूर्ति कपड़ो के कोठार से की जाती थी पर वागा के कोठार में कपड़ों को सिल कर तैयार किया जाता था। महाराजा के लिए विभिन्न अवसरों पर अलग-अलग तरह के कपड़े इसी कोठार में तैंयार होते थे। रानियों के वस्त्र पर कसीदाकारी, तारकाशी, गोटा किनारी, सलमा-सितारा का कार्य सोने-चाँदी के डोरों से इस विभाग में किया जाता था।

जवाहरखानाः-
कपड़ो को आकर्षक बनाने के लिए उन पर पन्ने, मोती, माणक व सोने-चाँदी के गहने आदि जवाहर खाने से ही पूर्ति की जाती थी। पन्ने, मोती, माणक व सोने व चाँदी के इन गहनों का हिसाब रखने व राजवंश के लोगो को देने के लिए यह कारखाना कार्यरत रहता था।25 दरोगा के द्वारा इन कीमती कपड़ों व गहनों का लेखा-जोखा किया जाता था। जवारातों व सोने-चाँदी के आभूषण की खरीद जवाहर खाने से की जाती थी। कपड़ो पर चाँदी व सोने का काम सुनारों के द्वारा किया जाता था इसलिए सुनारों को भी जवाहर खाने में नियुक्त किया जाता था।
महाराजा भीमसिंह कालीन 'कपड़ो रा कोठार री बही' में कपड़ो की खरीद एवं वितरण किये जाने वाले कपड़ो का विवरण दिया गया है।

© 2025 डॉ. ममता रानी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

बही में 'सेलो'26 नामक कपड़े की खरीद का विवरण भी दिया गया है। वही 'मिसरू'27 एक प्रकार का पट्टीदार कपड़ा होता है इसके अतिरिक्त दुपट्टा, पाग, धोतिया, मुलुमुल, विलयाती मुलमुल, ओढ़नी आदि का विवरण भी बही में मिलता है। धीरमा नामक कपड़े का उल्लेख हुआ है। धीरमा कपड़ा 76 धीरमों नग 7 खरीदे जाते थे।28 इसके अतिरिक्त महाराजा भीमसिंह के विवाह के समय अमरकोट के पास धोरीया नामक स्थान से विवाह के लिए वधु का डोला आया था। विवाह रस्म के समय कपड़ो के कोठार से वस्त्र ले जाने का उल्लेख इस प्रकार हुआ है।

। चीर री कस्तुरीया रंग री गोटा बुटी दार
। पाग । चीर री कसुमल29

कपड़ो के कोठार की बही में कर्मचारियों को भी कपड़ा आदि दिये जाने का विवरण दिया गया है। उस समय प्रचलित कपड़ों एवं राजघराने में कपड़ों के गोदाम की व्यवस्था की जानकारी बही से ही मिलती है।

महाराजा भीमसिंह के समय में कपड़ों के कोठार से रोजनावो महाराजा भीमसिंह के शासन काल में कपड़ों की खरीद का विवरण इस बही में किया गया है। भीमसिंह के समय प्रचलित कपड़ों के नाम - खीनखाय, गुलबदन का थान, मोलीयो (एक प्रकार की पाग), महमुदी थान, सोलो स्याहगढ़ एवं नागौरण पाग का उल्लेख किया गया है।

इस समय राजघराने की ओर से सिरोपाव देने का रिवाज था जिसमें महाराजा द्वारा अपने अधीन जमींदारों एवं अनेक लोगों को सिरोपाव (सिर से पांव तक पहनने वाले कपड़े) भेंट किये जाते थे।

मंदिरों के लिए राजघराने की ओर से कपड़े भेजे जाने का भी विवरण है। श्री गंगश्याम जी के मंदिर में तीज के उत्सव पर कपड़े भेजे जाने का विवरण इस बही में मिलता है। तीज की सवारी का विवरण जोधपुर की हकीकत बही में मिलता है।30 महाराजा भीमसिंह के समय सावण सूद 3 वि.स. 1854 को तीज के अवसर पर श्री जी (नरेश) की सवारी हुई। श्री गंगश्याम जी मंदिर में तीज के उत्सव पर कपड़े आदि भेजे जाने का विवरण है।31 वस्त्र-आभूषण इस प्रकार थे-

पोशाकः- पाग-सोसनी सोने री भस्मी री छापदार
चोफेरो-तुरा फूल रे रंग रो कोरदार
1 तुर्रो - जवारा सोने री
1 वागो - गुलाबी जालीदार
1 दुपट्टा - सब्ज कोरदार, कमरबंध

जुहार-1 सिरपेच हीरे का
1 मोतियों का चैकड़ा
एक कड़ा, एक कंठी हीरे की
1 चरण हीरा रा मादलीया रा
1 छोगो मोती रो।
1 माला मोती रो
4 बींटी (अंगुठी) 2 हीरे लगे हुए
1 मोती
1 मानक
1 अंगुस्तान (अंगुठे में पहनने वाला)
1 लुम्ब पन्ना री, तलवार बड़ी धूप
1 कटारी मीने के काम की जड़ाऊ
1 बरछी

महाराजा भीमसिंह की वर्षगांठ आषाढ़ सुद 12, वि.स. 1858 के दरबार के समय पोशाक व गहने इस प्रकार से पहने थे।32

वस्त्रः-

पागः-लाल (कंसुबल) रंग की, जिस पर सोने के गोटे का काम किया हुआ एवं सोने-गोटे का चैकारा लगा तथा सोने का तुर्रा लगा हुआ।

वागाः- गुलाबी रंग का, जिस पर सोने का काम किया हुआ तथा गोटा लगा हुआ।

दुपट्टाः- तोरूफुल रंग का, जिस पर सोने का गोटे का काम किया हुआ। कमर में कमर बंध तथा उसमें जड़ाऊ कटारी लगी हुई।

गहनेः- छोगा-हीरें का, जिसके फूल के बीच में माणक लगा हुआ।

- सिरपेच - हीरे का
- चोकडा - मोती का
- कंठी - मोती की
- कंढ़ा - हीरा, मोती पन्ना लगा हुआ।
- मादलीया - हीरे का
- माला - मोती की दोहरी
- राजमाला - जिसमे 100 मोती तथा 10 पन्ने लगे हुए।
- दुसचीया - हीरे की
- अंगुस्तान - हीरे का
- अंगुठीया - चार
- कटारी - जिस पर पन्ने लगे हुए।33

महाराजा भीमसिंह के समय होली के अवसर पर साफा पहना जाता था जो भिन्न प्रकार से सफेद अथवा पीले रंग का पेचा, तीज के लिए बहुरंगा लहरिया साफा एवं दशहरे की सवारी के लिए स्वर्ण के धागों से बनी फूल पत्ती वाला साफा34, वर्षा ऋतु, शीतकाल, ग्रीष्मकाल में गहरे हरे, कसुम्बी तथा कुंकुम रंग की पगड़ी बांधते थे।35 पगड़ी अठारह गज लम्बी तथा नौ इंच चैड़ी होती थी।36

राजवंश की स्त्रियां कांचली, कुर्ती, घाघरा तथा ओढ़नी का प्रयोग करती थी। रानियों के कपड़े बहुमूल्य तथा विभिन्न रंग व किस्मों के होते थे, जिन पर सोने-चाँदी के तारो से तारकसी की गई होती थी। कीर, गोटे तथा लप्पे का प्रयोग वस्त्रों को सजाने में किया जाता था। स्त्रियां अंगरखी भी पहनती थी। त्यौहार व तीज के अवसर पर बहुरंगा लहरिया, होली के अवसर पर फागणिया राजपरिवार की स्त्रियों द्वारा ओढ़ाया जाता था। राजवंश की सुहागिन स्त्रियां रंग रगीलें, चटकीले, कोर, गोटे लगे वस्त्र पहनती थी, वही विधवा स्त्री काले, सफेद, एवं पक्के रंगों के वस्त्र प्रयोग में लेती थी।

स्त्रियों के गहनों में शीशफूल, बोर, टीका, राखड़ी, झुमका, कर्णफुल, तिमणियाँ, कण्ठमाला, कंठी, हार, बाजुबंद, चूड़ी, गजरा, अंगूठी, मुंदरी, हथफूल, नेवरी-बिछिया, छल्ला आदि पहनती थी।37

मारवाड़ में कपड़े अन्य राज्यों से भी आयात किये जाते थे जैसे जयपुर, दक्षिण भारत, पीपाड़, बीकानेर बहालवपुर, कोटा, वाराणसी से व्यापारी आकर अलग-अलग दामों में बेचते थे। बही में इनके मूल्य सहित विवरण मिलता है। जैसे-

© 2025 डॉ. ममता रानी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

"श्वाम री पाणा मिगसर रे मास में सूद 14 खरीद जैपुरी चापाराम रो।"
"तास री पागा भादवा बद उनग। खरीद सुराणा वीर दीपक री कीमत।"

इस प्रकार कपड़ों की आयात-निर्यात की जाती थी तथा मौसम के अनुसार कपड़ों को रखा व पहना जाता था। महाराजा भीमसिंह के कपड़ों रे कोठार री बही में कपड़े का विवरण दिया गया है। पुरूष व स्त्रियों के वस्त्र आभूषण समाज के विभिन्न वर्ग में स्त्रियों के वस्त्र-आभूषण का विवरण जवाहर खाना व मिन्ट तथा कपड़ो रे रोजनावा की बहियों में विवरण मिलता है।

महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश के अन्तर्गत 50500 हस्तलिखित बहियों का दुर्लभ संग्रह संग्रहित है। जिसमें महाराजा भीमसिंह कालीन कपड़ो के कोठार जवाहर खाना बही एवं आभूषण इत्यादि की बही तथा उस समय के राजघराने एवंम् समाज के विशेष वर्ण के लोगो के द्वारा पहने जाने वाले वस्त्र एवं आभूषण की जानकारी इन बहियों से मिलती है। महाराजा भीमसिंह के समय की यह बहिया न केवल वस्त्र आभूषण तक बल्कि उस समय की वेशभूषा पर भी महत्वपूर्ण जानकारी प्रदान करवाती है।

खान-पानः-

राजवंश में शाकाहारी तथा मंासाहारी दोनो प्रकार के भोजनों का प्रयोग किया जाता था। नरेश बिछायत के ऊपर बैठकर चाँदी की चैकी पर, चाँदी की थाली कटोरियों में भोजन करते थे।38 नरेश व रानियों के अलग-अलग रसोड़ो में गेहूँ से बने रोट, रोटी, बाटी, पूड़ी, चावल कई प्रकार की हरी एवं सूखी सब्जियाँ, दालें, खीर, लापसी एवं हलवा तैयार किया जाता था।39 मिष्ठानों में लड्डु, मालपुआ, दही बड़ा, जलेबी, कलाकंद, केसरिया चक्खी, पेठा, नुकती, घेवर, दाल के लड्डु आदि का प्रयोग बहुतायत से होता था।40 आम, नींबू, अंगूर, कैरी के आचार प्रयोग में लिए जाते थे।41

खान-पान के लिए एक अन्न के कोठार42 नामक विभाग से ही खानापूर्ति होती थी। प्रतिदिन राज के रसौड़े हेतु आवश्यक सामान यहाँ से उपलब्ध करवाया जाता था। तीज त्यौहारों, जन्म-विवाह तथा मृत्यु के समय अन्न एवं अन्य वस्तुओं की आपूर्ति यहाँ से होती थी। इस विभाग हेतु मोल-भाव कर वस्तुओं को खरीद कर कोठार में एकत्र किया जाता था। जनानी ड्योढ़ी में वस्तुओं की मांग (घी, गुड़, मूंग, चावल, मैदा, तिल, तेल, नारियल एवं मेवों) की भी यहां से पुर्ति की जाती थी। विशिष्ट पर्वो पर भोज आदि की व्यवस्था भी अन्न के कोठार से ही होती थी।

म्हाराजा भीमसिंह के समय सिंघवी सवाईराम (वि.स. 1853) और मुहणोत रूघनाथ (वि.स. 1856) इस पद पर रहे।43 व्यास नथू को दो बार (वि.स. 1855 और 1860) नियुक्त किया गया था।44

हजूर का रसोड़ाः-

नरेश के भोजन आदि के प्रबन्ध हेतु हजुर का रसोड़ा होता था। विभिन्न प्रकार के व्यंजन, तरकारियाँ सामिष निरामिष भोजन यहाँ तैयार होता था। 'नरेश के भोजन' का थाल रसोईदारो द्वारा तैयार करने के पश्चात् 'चखणे' पद धारित व्यक्ति को चखाया जाता था। त्यौहारो पर विशेष सामग्री एवं भोजन के आयोजनों पर कई प्रकार के पकवान श्री हजूर के रसोड़े में तैयार होते थे।

महाराजा कुंवर की सगाई के समय तथा अन्य शुभ अवसरों पर इष्टदेवी को मिठाई की भेंट चढ़ाई जाती थीं।45

मारवाड़ का विशिष्ट पकवान लापसी (गेहूँ के दलिये, घी, गुड़ से बना व्यंजन) है जो देवी देवताओं के चढ़ाया जाता था।

वि.स. 1848 के आषाढ़ में महाराजा कंवर भीमसिंह जी की सगाई जैसलमेर के रावल श्री मूलराज जी की पोती से हुई तब सगाई का नारियल जैसलमेर से आया। सगाई की रस्म के पश्चात् भोज हुआ, जिसके लिए लापसी तैयार हुई।46 **निम्न प्रकार सेः-**

10 मण बाट (गेहूँ का दलिया), 10 मण गुड़, 10 मण घी

तथा ब्राह्मणों को भोजन करवाया तथा राजघराने से संबधित व्यक्तियों को भोजन करवाया गया।47 महाराजा भीमसिंह की मृत्यु के 12 वें दिन भोज का आयोजन किया गया था। उसमें 1 दिन के 200/- मन खांड जलेबी बनाने में प्रयुक्त की गई थी।48

मारवाड़ रेगिस्तानी प्रदेश होने के कारण यहां पर बाजरा सबसे अधिक मात्रा में उत्पन्न होता था। साधारण जनता ज्यादातर बाजरे का प्रयोग करती थी। यहाँ गेहूँ, चावल, मुंग, मोठ, चने आदि का प्रयोग भी होता था। गुड़, धृत और खांड का प्रयोग मिष्ठान बनाने में किया जाता था। जायफल, जावित्री, दाल चीनी, लोंग आदि मसाले भी यहां प्रयोग में लाते थें। विवाह व उत्सवों में घूघरी, चूरमा, लडडु, जलेबी आदि मिष्ठान बनाये जाते थे। बादाम, पिस्ता, किशमिश आदि सूखा मेवा अनार, आम आदि फलों का भी प्रयोग करते थे।49

त्यौहारों पर विशेष पकवान बनाये जाते थे जैसे तीज (आखातीज) पर बाजरी मोठ का 'खीच' तथा गुड़ की गलवानी बनाते थे।50

नवरात्रि के व्रत के समय मांस, दारू का सेवन नही होता था। अक्षयतृतीया, होली, दीवाली, सगाई, विवाह के अवसर पर अफीम को पानी में घोल कर मेहमानों की मनुहार की जाती थी। भोजन के पश्चात् पान-सुपारी खाने की परम्परा थी। रानियां भी पान-बीड़े खाने का शौक रखती थी। जिसकी पूर्ति तंबोला खाने से होती थी।52 शिशु जन्म के पश्चात् प्रसुता रानी को विशिष्ट प्रकार के व्यंजन बनाकर खिलाये जाते थे जिन्हे स्थानीय भाषा में सुखाल सारी कहा जाता था तथा इन्हें तैयार करने में अजवाइन, सोंठ, घी, सुपारी, गुड़ जायफल, मजीठ, दीपर, खोपरा, गोंद, केसर, बादाम एवं खसखस वंशलोचन का प्रयोग किया जाता था।53

सामाजिक जीवन के निर्धारक घटक संस्कार एवं तत्सम्बन्धीः-

रीति रिवाजः-

मनुष्य का वैयक्तिक सामाजिक विकास हो, साथ ही दैहिक और भौतिक जीवन सुव्यस्थित ढ़ंग से उन्नत हो सके, इस हेतु जीवन में संस्कारों की नियोजना की गई। संस्कार एक ऐसी धर्म सम्मत व्यवस्था है जिसके अनुपालन के उधेश्यों का विवरण उपनिषदों, गृहासुत्रों धर्मसुत्रों, स्मृतियों, पुराणों आदि में मिलता है। सभी धर्म शास्त्रकार संस्कारों की संख्या 16 मानते है। गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तों नयन, जातकर्म, नामकरण, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूडा कर्म, कर्मवेद्य, विद्यारम्भ, उपनयन, वेदारम्भ, केशान्त, समावर्तन, विवाह और अत्येष्टि आदि।

राजवंश सें संबधित बहियों व ख्यातों में राजवर्गीय रस्मों का विवरण मिलता है। सामाजिक स्थिति के अनुसार प्रत्येंक व्यक्ति जन्म, विवाह,

© 2025 डॉ. ममता रानी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

मृत्यु आदि संस्कारों को अपनी जाति की प्रथा, परम्पराओं के अनुसार सम्पन्न करता था।

इस प्रकार महाराजा भीमसिंह ओर उसके समकालीन अनेक वृतान्तों का अध्ययन करने से उस समय के समाज व लोकसंस्कृति के स्वरूप को दर्शाया गया है। समाज मे जन्म, विवाह ओर मृत्यु के विभिन्न रीति-रिवाज प्रचलित थे। समाज के उच्च वर्गो में बहु विवाह की प्रथा प्रचलित थी। इस समय दहेज प्रथा का प्रचलन था, धन के अतिरिक्त दास दासियों को भी दहेज मे देने के प्रसंग राणी मंगा भाटो की बहियों व रीति किरायावर की बही से लिया गया है। स्त्रियों के वस्त्र, आभूषण समाज के विभिन्न वर्ग के रूप मे स्त्रियों द्वारा धारण किया जाता था।

इस प्रकार महाराजा भीमसिंह के समय मारवाड़ की लोक संस्कृति व समाज परिपूर्ण था क्योंकि जो प्रथा शुरू से चली आ रही थी उन्ही को महाराजा द्वारा सुधार करके आगे बढ़ाये रखा। मारवाड़ की संस्कृति व समाज का स्थान आज भी सर्वोपरी है। इस का विवरण हमे मारवाड़ की बही, पट्टों, परवानों, ख्यात में मिलती है, जो कि मारवाड़ की संस्कृति व समाज को पूर्ण करती है।

सन्दर्भ सूची

1. मूदियाड़ री ख्यात. भाटी **VS,** सोनगरा **AS.** पृ. **30.**
2. जोधपुर हकीकत बही. न. **05,** वि.सं. **1846–1850.** पृ. **750.**
3. हकीकत बही. न. **4.** जोधपुर रिकॉर्ड; पृ. **421.**
4. हकीकत बही. न. **1,** वि.सं. **1820–1830.** जोधपुर रिकॉर्ड; पृ. **206, 534.**
5. मर्दम शुमारी रिपोर्ट: राज मारवाड़. **1891;** भाग **1:** पृ. **151–161.**
6. राजस्थान गजेटियर. भाग **3:** पृ. **84–85.**
7. रिपोर्ट ऑन सेंसस ऑफ मारवाड़. भाग **2:** पृ. **56.**
8. जोधपुर हकीकत बही. न. **8,** वि.सं. **1856–1860;** पत्रांक **417.**
9. हकीकत बही. न. **5,** वि.सं. **1846–1850.** जोधपुर रिकॉर्ड; पृ. **421.**
10. तवारीख. जोधपुर ख्यात. भाग **3;** पृ. **61–62, 17.**
11. तवारीख. जोधपुर ख्यात. भाग **3;** पृ. **171–172, 166–168.**
12. राजस्थान गजेटियर. भाग **3:** पृ. **83.**
13. एडमिनिस्ट्रेटिव रिपोर्ट: पृ. **2.**
14. मर्दम शुमारी रिपोर्ट: राज मारवाड़. **1891;** भाग **1:** पृ. **165–166.**
15. मारवाड़ परगना री विगत. भाग **1:** पृ. **391, 497;** भाग **2:** पृ. **10, 310.**
16. मर्दम शुमारी रिपोर्ट: राज मारवाड़. **1891;** भाग **1:** पृ. **20.**
17. टॉड **J.** एनाल्स एंड एंटीक्विटीज ऑफ राजस्थान. भाग **2:** पृ. **485–486.**
18. तवारीख: पृ. **84.**
19. भाटी हुकमसिंह राठौड़ री ख्यात: पृ. **687.**
20. भाटी हुकमसिंह राठौड़ री ख्यात: पृ. **688.**
21. भाटी हुकमसिंह राठौड़ री ख्यात: पृ. **688.**
22. राणी मंगा भाटों की बही (मारवाड़ का रनिवास). महेन्द्रसिंह **N;** पृ. **65.**
23. राणी मंगा भाटों की बही: पृ. **69.**
24. पारीक **NK.** राजदरबार और रनिवास: पृ. **45–48.**
25. जोधपुर ओहदा बही. न. **3;** पत्रांक **34.** राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर.
26. कपड़ों रा कोठार री बही. वि.सं. **1853;** पत्र सं. **207, 2**क.
27. बही: पत्र सं. **2**क.
28. बही: पत्र सं. **27**क.
29. बही: पत्र सं. **83**क.
30. हकीकत बही. न. **7,** वि.सं. **1854–55.** राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर.
31. महाराजा भीमसिंह जी रे वगत कपड़ों रे कोठार रो रोज-नावो. संग्रह क्र. **140;** पत्र सं. **320;** वि.सं. **1856.**
32. जोधपुर हकीकत बही. न. **8,** वि.सं. **1856–60;** पत्रांक **366–67.**
33. कपड़ों रा कोठार री बही. वि.सं. **1853;** पत्र सं. **207.**
34. जोधपुर हकीकत बही. न. **8,** वि.सं. **1856–60;** पत्रांक **439, 450, 452–453.**
35. जोधपुर हकीकत बही. न. **8,** वि.सं. **1856–60;** पत्रांक **439, 450.**
36. जोधपुर हकीकत बही. न. **8,** वि.सं. **1856–60;** पत्रांक **452.**
37. जोधपुर हकीकत बही. न. **8,** वि.सं. **1856–60;** पत्रांक **366–67.** राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर.
38. टॉड **J.** एनाल्स एंड एंटीक्विटीज. भाग **3:** पृ. **1630.**
39. जोधपुर हकीकत बही. न. **9,** वि.सं. **1856–60;** पत्रांक **440.** राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर.
40. सूरज प्रकाश. भाग **2.** लालस **S,** संपादक; पृ. **218–219.**
41. जोधपुर हकीकत बही. न. **8,** वि.सं. **1856–60.** राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर.
42. जोधपुर ओहदा बही. न. **3.**
43. भाटी हुकमसिंह. मारवाड़ के ओहदेदारों का इतिहास में योगदान. जोधपुर: महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश; पृ. **129.**
44. भाटी हुकमसिंह. मारवाड़ के ओहदेदारों का इतिहास में योगदान. जोधपुर: महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश; पृ. **130.**
45. जनानी ड्योढ़ी बही. क्र.स. **244;** वि.सं. **1859.** जोधपुर: महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश.
46. जोधपुर राज्य री रीत किरियावर री बही. पत्रांक **54(**अ). चोपासनी, जोधपुर.
47. जनानी ड्योढ़ी ब्याव री बही. क्र.स. **244;** वि.सं. **1859.** जोधपुर: महाराजा मानसिंह पुस्तक प्रकाश.
48. जोधपुर हकीकत बही. न. **8,** वि.सं. **1856–60;** पत्रांक **435.**
49. ब्याह री बही. न. **1.** जोधपुर रिकॉर्ड; पृ. **54.**
50. ब्याह री बही. न. **1.** जोधपुर रिकॉर्ड; पृ. **1–53.**

Creative Commons (CC) License

This article is an open-access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.

© 2025 डॉ. ममता रानी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/

© 2025 डॉ. ममता रानी. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY NC ND).https://creativecommons.org/licenses/by/4.0/